B.A.-I HISTORY (SUBSIDIARY), 2021

NOTES PREPARED BY →

DR. MAMITA KUMARI YADAV
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF HISTORY
VAISHALI MAHILA COLLEGE
BIHAR UNIVERSITY,
MUZAFFARPUR.

Scanned with CamScanner

हड़प्पाकालीन धर्म एवं दर्शन

यह सर्वविदित है कि हड़प्पा सभ्यता अथवा सैंधव सभ्यता थी। इसी कारणवश इस सभ्यता से सैंधव धार्मिक तथ्यों की जानकारी का एकमात्र स्रोत उत्खनन से प्राप्त सामग्री है। चूँकि सभ्यता का मुख्य आधार कृषिकर्म था। इसी कारण यहाँ धर्म के क्षेत्र में देवी उपासना की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इस सभ्यता के आधार पर कृषिमूलक होने तथा कालीबंगा एवं आलमगीरपुर को छोड़कर लगभग सभी स्थलों से मातृदेवी की मूर्तियों के अधिक संख्या में पाए जाने के कारणवश विद्वानों का ऐसा मानना है कि हड़प्पाकालीन धर्म की मुख्य विशेषता मातृदेवी की उपासना थी। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर ~~पशुपति युक्त~~ पशुओं से घिरे हुए योगी मुद्रा युक्त वर्तमान शिव के तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् जॉन मार्शल एवं डी. एन. झा का मानना है कि हड़प्पा काल में पशुपति महादेव की उपासना होती थी। लगभग सभी स्थलों से कूबड़युक्त तथा कूबड़रहित साँड के मृण्मूर्तियों के पाये जाने के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि हड़प्पावासी साँड के स्थान पर कूबड़वाले साँड की पूजा करते थे। मोहनजोदड़ो तथा लोथल से नाग के पूजा का प्राचीनतम पुरातात्विक प्रमाण प्राप्त होता है। वहीं लोथल से बनवाली एवं मोहनजोदड़ो से पूजे जाने का साक्ष्य मिलता है। कोटदीजी एवं कालीबंगा को छोड़कर लगभग सभी स्थलों से पत्थर एवं मिट्टी के लिंग एवं योनि पाए गए हैं। विद्वानों एक समूह का ऐसा मानना है कि

इसका प्रयोग ताबीज के रूप में होता होगा। लोथल से भी चूनी पूजा का प्राचीनतम पुरातात्विक प्रमाण प्राप्त होता है। लोग योग से परिचित थे। मूर्ति पूजा विद्यमान थी। परंतु किसी भी स्थान से मंदिर की विद्यमानता का प्रमाण नहीं मिलता है। कालीबंगा

~~इस प्रकार से उपरोक्त तथ्यों के~~

~~विष~~ से वर्गाकार, संघोल (पंजाब) से, कालीबंगा, लोथल से अंडाकार तथा कालीबंगा से आयताकार अग्निकुंड मिला है। जिसे विद्वानों ने वैदिक कर्म काण्डों को जोड़ने का प्रयास किया है। परंतु यह अभी तक शोध का विषय है।

इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि हड़प्पाकालीन धर्म, दर्शन तथा आराधना पद्धति तात्कालीन भौतिक परिवेश तथा आवश्यकता पर आधारित थी।